इस मास में विशेष: साधना दीक्षा

कपिला योगिनी साधना

योगिनी एकादशी - 21 जून

योगिनी की **साधना** करने का अर्थ अपने जीवन में हटा देना सभी **अनिष्टों** को, चाहे वे **वर्तमान** में साथ चल रहे हों अथवा **काल के गर्भ** में पल रहे हो। **ऋण, चोर्य, भय, आकस्मिक दुर्घटना, गुप्त-घात** या जीवन के छोटे-छोटे अनेक **विवाद**, जो जीवन में **विष** लेते रहते है, उनका **निराकरण पूर्णता** से होता है **योगिनी साधना** से। **पूर्ण तंत्र शास्त्र** को अपने में **आत्मसात** किये, **कपिला योगिनी** अपने **सिद्ध साधक** में भर देती है ऐसा **तेज, बल** और **उत्साह** जो केवल **तंत्र** के द्वारा ही **संभव** है।

इतर योनि साधना

आषाढ़ी अमावस्या - 25 जून

यह बात **सिद्ध** हो चुकी है, कि **भूत-प्रेत** किसी प्रकार से कोई **हानि** नहीं पहुँचाते हैं। **मनुष्य** से ज्यादा **सेवा** करते हैं, चौबीस घण्टे **आज्ञा पालन** में तत्पर रहते हैं तथा वे सभी **कार्य** कर देते हैं जो **मनुष्य** के लिये **स्वाभाविक** रूप से **असम्भव** होते हैं। अतः **साधक** यह साधना सम्पन्न कर **भूत** को **अनुचर** के रूप में रख सकता है और उससे **मनोवांछित कार्य** सम्पन्न करा सकता है। इस **साधना** को **स्त्री** या **पुरूष** कोई भी कर सकता है, इस **साधना** से किसी भी प्रकार की कोई **हानि** नहीं होती।

श्री जगन्नाथ साधना

जगन्नाथ रथ यात्रा- 27 जून

मन को समस्त प्रकार की **दुश्चिन्ताओं** से **शुद्ध** करने के लिये यह **परम शक्तिशाली** एवं **दिव्य विधि** है, क्योंकि **भगवान जगन्नाथ जी** की **साधना** कर मनुष्य उन सब वस्तुओं के प्रति **अनासक्त** हो जाता है, जो **मन को भ्रमित** करने वाली होती है। **मन** को उन सारे कार्यों से **विरक्त** कर लेने पर ही मनुष्य **सुगमता पूर्वक वैराग्य** प्राप्त कर सकता है। **वैराग्य का अर्थ है- पदार्थ** से **विरक्ति** और मन का आत्मा में प्रवृत्त होना और यह **'जगन्नाथ साधना'** से ही संभव है।

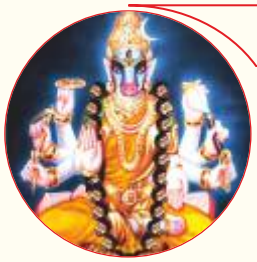

धूम्र वाराही शक्ति साधना

दुर्गाष्टमी पर्व - 03 जुलाई

धूम्र वाराही दुर्गति व **कलह निवारणी शक्ति** है, जो अपने **भक्तों** को **अभय** देने वाली तथा उसके **शत्रुओं** के लिये साक्षात् काल स्वरूप हैं। जब कोई **साधक धूम्र वाराही साधना** सम्पन्न करता है, तो **भगवती वाराही** प्रसन्न होकर **साधक** के **शत्रुओं** का **भक्षण** कर लेती हैं और **साधक** को **अभय** प्रदान करती हैं। इस साधना से **भूत-प्रेत, पिशाच, तंत्र बाधा** का साधक पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। साथ ही उसे सभी **दुःखों** से निवृत्ति मिलती है और वह **विपरीत स्थितियों** को भी **अनुकूल** बना लेने में **समर्थ** होता है।

साधना एक **साधक** के जीवन का **अभिन्न अंग** है, जो साधक समय-समय पर स्वयं व सामूहिक रूप से साधना सम्पन्न करते हैं, वे सदैव **सद्गुरूदेव** के **हृदय** में एक **विशिष्ट स्थान** प्राप्त करते हैं। ये **विशिष्ट साधनायें** सम्पन्न करने के लिए **कैलाश सिद्धाश्रम** में सम्पर्क करें।